आओ जाने की रोशनी

उंगली उठाती है ये दुनिया मुझपर,
कहती है मैं दूसरों की तरह नही हूँ।
कुछ मिला नहीं मुझे दर्द के अलावा,
मेरी रास्ते की रोशनी को अंधेरे में बदल कर पराया बनगई।

तब कोई आयी मेरी पास,
जो मेरी रात को दिन बनाया,
अंधेरे को रोशन बनाया,
और मेरी हताशा की आँसुओं को -
खुशी की बदल दी।

वह मेरी दिलों को हिम्मत
और यादों को अनुभव बनाई।
खोया हुआ था मैं, उस अंधेरे में,
नई दिशा दिखाकर अंधेरे को रोशनी बनाई।

इंसान है ये दुनिया के,
जो इंसानियत को भूला है।
अपने थे ~~बो~~ मेरे,
जिन्होंने मुझे दे दे दिया है।

सही कहा है, मैं उनमें से नहीं हूँ।
जो अपनों की जिन्दगी के अंधेरे की -
तरफ दिखाते हैं।
अपना था कभी मेरा, अब पराया बन गयी।
पराया है वो मेरी बरबादी की इंतजार में।

अकेली आयी थी इस दुनिया में।
अकेली ही जाऊँगी, लेकिन जीतकर।
आज नहीं तो कल मेरा है।
खुशी नहीं तो अब गम भी नहीं है।

लेकिन आगे क्या होने वाला है ?
ये सोच अब नही है मुझे।
क्यों कि संसार की ये रखवाला,
मेरा भी है।

आगे क्या होगा वो कहानी है,
मशहूर होगा वो कहनी।
रोशन होगा वो कहानिकार
आगे जाने का रोशनी वही है,-
जो अंधेरे रस्ते में रोशनी की.
नयी दिशा दिखायी।

खूबसूरत है दुनिया के कल्पना,
वास्तव में दुनिया है एक खेल मिझौनी।
हारा है वही जो इस खेल की समझ नही।
जीताहै वो जो हार नही मानी।